मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

मधुमक्खी पालन में सहायक पौध

कुमुद सिंह, दीपक कुमार जायसवाल एवं इंगले दीपक श्यामराव
कृषि कीट विज्ञान विभाग, बिरसा कृषि विश्वविधालय, रॉची
*Email-: kumud.singh1@gmail.com

मधुमक्खियाँ जिस वस्तु से मधु का निर्माण करती है। उनका संग्रह अधिकांश पेड़–पौधों पर लगने वाले फूलों से किया जाता है। कुछ ऐसे फूल होते हैं जिनसे दोनों अमृत और पराग मिलते हैं और कुछ फूलों से सिर्फ अमृत या पराग मिलता है। पराग मधुमक्खियों के अपने और बच्चों की भोजन की पूर्ति होती है। मधुमक्खियों को अमृत से शक्ति प्राप्त होती है जिससे वह जीवन की सारी क्रियायें करने में सफल होती हैं ऐसे पौधे जिनसे दोनों अमृत और पराग मिलते है मधुमक्खी पौधे कहते है। पालन में सबसे बड़ी समस्या भोजन के अभाव की होती है। हर स्थान पर पूरे वर्ष पुष्प उपलब्ध नही होते, कभी फूल होते है और कभी ऐसा भी होता है कि एक स्थान पर वही वनस्पति अत्याधिक पुष्पामृत अमृत पैदा करती है तो दूसरे स्थान पर उसी से मौनों को कुछ भी नहीं मिल पाता है।

अगर किसी स्थान पर मौनों का पुष्पामृत का पराग देने वाले पौधे अधिक मात्रा में लम्बी अवधि तक खिलते रहते है तो वह स्थान मौनालय के लिए अच्छा माना जाता है। जब इस प्रकार के पौधे बिल्कुल नहीं फूलते उस समय को अकाल का समया कहा जाता है। इसलिए मधुमक्खी पालक को अपना मौनालय स्थापित करने हेतू ऐसे स्थान का चुनाव करना चाहिए जहा पर एक दो–प्रधान मधुश्राव चलते हों तथा बीच में लघुश्राव भी चलते हों और अकाल का समया बहुत कम होता है।

पुश्पामृत देने वाले पौधों को मौनपाल पुष्पामृत उत्पादक पौधे कहकर पुकारते है। पराग देने वाले पौधे को पराग उत्पादक कहा जाता है। पुष्पामृत शहद निर्माण के लिए उपयोगी होता है तो पराग मौनो के भोजन के लिए अत्यंत उपयोगी है। शहद मौनों के लिए जहाँ कार्बोहाइड्रेट भोजन की उपलब्धि कराता है तो पराग से उनके लिए प्रोटीन की प्राप्ति होती है।

मधुश्राव के लिए तैयारी

मौनोपालों के मधु उत्पादन की फसल किसी एक बात पर निर्भर नही करती है। मौन विज्ञान की अच्छी जानकारी, मौनवंश की शक्ति, अच्छा मौसम तथा वन्य पुष्पों की बहुलता ही मधु की फसल को प्रभावित करती है। इन सबके साथ भी जो बात सर्वाधिक उपयोगी होती है वह है मौनपाल अपनी योग्यता से इन सब बातों का संयोग ठीक समय पर करें। यानि जिस समय प्रकृति में भाति–भाति के फूलों की इतनी ज्यादा संख्या होनी चाहिए कि अधिक से अधिक पुष्परस संचित किया जा सके, इसके लिए युवा रानी मक्खी का होना आव यक है तथा अपने स्थान पर होने वाले प्रथम श्राव से कम से कम 6 सप्ताह पूर्व से मौनो को भोजन खिलाया जाना उपयोगी रहता है। इससे रानी मक्खी अंडे देना शुरू कर देती है और इस काल के दिये अंडे ठीक समया पर मौन बनकर पुष्परस संग्रह करने का काम संभाल सकती है। अगर पतझड़ में पुष्परस व पराग का अच्छा भण्डार आपने अपने प्रत्येक वंश में छोड़ दिया हो तो यह काम और भी अच्छे सुचारू रूप से चल सकता है।

मौनालय के चारों ओर के 4-5 कि.मी. के क्षेत्र में मौने बिना बाधा के विचरण कर सकती हैं इसलिए जहाँ तक पुष्पामृत एकत्रित करने का प्रश्न होता है। मधुमक्खियाँ 3,4 कि.मी. तक पुष्पामृत का संग्रह करके शहद का निर्माण कर सकती है। इस लिए मौनालय ऐसे स्थान पर स्थापित करना चाहिए जिसके चारों ओर पुष्पामृत देने वाले पुष्प या पौधों का जंगल हो, बगीचा हो या जहाँ ऐसे अनाजों की खेती होती हो जिस काल में किसी स्थान पर पुष्पामृत देने वाले पौधे अधिक मात्रा में खिलते है और मौने उनसे पुष्परस एकत्रित करने लगती है। उसे मधुश्राव का काल कहते है। विभिन्न क्षेत्रों में ऐसा समय वर्ष में केवल एक, दो बार ही आता है। वे स्थान जहाँ मधुश्राव 2, 3 बार चलता हो मधुक्खी पालन की दृष्टि में काफी अच्छे समझे जाते है। किसी स्थान पर वसंत का श्राव चलता है तो कहीं ग्रीष्म का कहीं पतझड़ का श्राव होता है तो कहीं जाडों का इसलिए मधुक्खी पालक को ऐसी योजना बनानी चाहिए कि वह वर्ष भर में अधिक से अधिक श्रोतों का लाभ उठा सके।

सफल मौनपालन के लिए ऐसा करना आवश्यक है। व्यवसायिक रूप से मौनपालन करने वालों के लिए तो यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। नीचे कुछ ऐसे पोधें की जानकारी दी गई है जिनसे मधुमक्खियों को चारा मिलता है। कई प्रकार के फलों के वृक्ष, जंगली वृक्ष, जंगली झाड़ियाँ, घास, खेती की फसले, सब्जियाँ, बगीचों में लगे विभिन्न प्रकार के फूल मधुमक्खियों को भोजन, प्रदान करते है।

फलों के वृक्ष	:	नींबू, नासपाती, नारंगी, जामुन, चकोतरा, केला आंवला, आम, अनार, जामफल (अमरूद) पपीता, बादाम, लीची, इमली, जामुन इत्यादि।
जंगली वृक्ष	:	साल, अमलतास, कचनार, खैर, सफेदा, गूलर, पीपल, नीम, करंज, बबूल, बहेड़ा, बेर, बांस, रीठा, सिरस, शीशम, सेमल इत्यादि।
जंगली झाड़ियां	:	नागफनी, भांग, रामबांस, कुन्ज, कनसाजी, कलथुनिया, इत्यादि।
घांस	:	रिजका,(अल्फा–अल्फा), बरसीम, क्लोवर, दूब, वन अनवाइन, अंजन इत्यादि।
खेती की फसलें	:	अंगूर, चना, तिल, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, शकरकन्द, सरसों इत्यादि।
सब्जियाँ	:	कद्दू, करेला, खीरा, गाजर, चुकन्दर, चौलाई, टमाटर, बैंगन, भिंडी, लौकी, तोरई, धनिया, प्याज,पेठा, गोभी, मिर्च, मेंथी, मूली, लहसुन, लोबिया, इत्यादि।
फूलों की फसलें	:	पलास, ढ़ाक, देसू, मुन्दरी सुन्दरी गुलाब, डहलिया, डेजी, पॉपी, रेलवे क्रीपर, सूरजमुखी इत्यादि।

क्र० सं०	स्थानीय नाम	वैज्ञानिक नाम	पुष्प विकसन अवधि	श्रोत
1	सरसों	ब्रासिका स्पीसीज	जनवरी– फरवरी	मकरंद. पराग
2	अरहर	कजैनस कंजन	सितम्बर– नवम्बर	मकरंद
3	तिल	सिसेमम ओरिइन्टेली	सितम्बर	मकरंद
4	लीची	लोफिलियम लीची	मार्च– अप्रैल	मकरंद
5	नाशपाती	पाइरस कम्यूनिस	फरवरी– अप्रैल	मकरंद. पराग
6	बोतल ब्रुश	कलिस्टम् लैंसेलेटस	मार्च– अप्रैल	मकरंद
7	सहजन	मोरिंगा टेरिगोस्परमा	फरवरी	मकरंद
8	सेमल	सालमालिया मालाबेरिका	जनवरी– फरवरी	मकरंद
9	क्रीपप्लांट	लेगरस्त्रोमिया इंडिया	अप्रैल– जून	प. म
10	ज्वार	सोरघम वलगेरी	जुलाई दृ दिसम्बर	म
11	ज्वार	सोरघम वलगेरी	जुलाई दृ दिसम्बर	म
12	पटसन	क्नाबिस सेटाइवा	–	प
13	कूटू(बक व्हीट)	फेगोपाइरम	–	प़म
14	गाजर	डोकस कैरोटा	मार्च–अप्रैल	प़म
15	प्याज	एलियम सीपा	मई– जून	प़म
16	मूली	रेफेनस सटाइवस	दिसम्बर– मार्च	प़म
17	लहसुन	एलियम रुबेलयम	–	प़म
18	एसपेरागस	एस्पेरागस औफिसिनेलिस	–	प़म
19	नाशपाती	पाइरस प्रजाति	–	प़म
20	कद्दू (सीताफल)	कुकुरवीटा पेपा	–	कद्दू
21	खीरा	कुकूमिस सेटाइवस	–	
22	अखरोट	जुगलेंस रेजिया	मार्च–अप्रैल	प
23	अमलतास	कैसिया फिस्टूरा	मई– जून	म
24	अनार	प्रेनिका प्रनेटन	मार्च– अप्रैल	म
25	अयार	पाईरिस ओवेलिफोलिया	अप्रैल– मई	म

26	बबूल	एकेशिया ऐरेबिका	फरवरी– मार्च	म
27	बांज	क्वरकस इनकाना	मार्च	म
28	धतूरा	धतूरा फस्टुसा	सालफर	प
29	कचनार	बोहिनिया पुरपूरिया	मार्च– नवम्बर	म
30	कोको	डिपोसपिरोस काकी	अप्रैल	म
31	कलथुनिया	प्लैक्टेनथस काईस्ट	सितम्बर– नवम्बर	म
32	कामनी	मुरैया इकजोटिका	जून– जुलाई	म
33	करेला	मोमोर्डिका चारेंशिया	जुलाई– अगस्त	म
34	खुबानी	प्रूनस आर्मिनियाका	फरवरी– मार्च	म
35	कूजा	रोजा मोसचाटा	अप्रैल– मई	प
36	लिसोडा	कोडिया डाइपोतोमा	मार्च– अप्रैल	प
37	लुकाट	इरिओबोत्रिया जेपोनिया	मार्च– अप्रैल	म
38	मधुवा	इल्युसिने किराकाना	अगस्त– सितम्बर	प
39	मजनू	सेलिक्स बेबिलोनिया	फरवरी– मार्च	प
40	महल	पाईरस प्रजाति	मार्च– अप्रैल	म
41	शहतूत	मोरस इण्डिका	मार्च	प
42	पदम	प्रूनस औरसोइडिस	नवम्बर– दिसम्बर	म
43	पोस्त	पपेवर सोमनीफरम	मार्च– अप्रैल	प
44	रामबांस	पेयूक्का इलोइफोलिया	जुलाई– अगस्त	प
45	जंगली गुलाब	रोजा मेक्रोफाइला	अप्रैल– मई	प
46	सूरजमुखी	हेलिएनथस एत्रस	मार्च– सितम्बर	प
47	कुंटज	सेंटराथिरम एंथेलमिटिकम	अक्टूबर– नवम्बर	म
48	सुकालीन	सिमप्लोकोस बेडोमी	नवम्बर	प
49	तीका करावाहवोती	थैलेपिपली इक्सोसेफेलस	नवम्बर– जनवरी	प़ म
50	गोमानी	डाइसोफाइला स्टीलेटा	दिसम्बर– जनवरी	प़ म
51	नैनाया	लैगरस्टोइमिया पार्विफ्लोर		म
52	डबरा	युरेरिया पिक्टा	मई	म
53	अर्जुन	टरमिनेलिया अर्जुना	मई– जून	प
54	फुरुश	लेजरइस्ट्रोइमिया इण्डिका	मई– जून	म
55	गोल्डन रौड	सोलिडांगो कैना	सितम्बर– अक्टूबर	प